अगस्त 2026 : आएँगी हल्की फुहारें

रे ब्रैडबरी

अनुवाद: हरजिन्दर सिंह 'लाल्टू'

अमेरिकन कथाकार रे ब्रैडबरी अपनी अनोखी विज्ञान-कथाएँ और फन्तासी के लिए जाने जाते हैं। उनकी कहानियों में इन्सान की फितरत की गहरी पड़ताल है। उनकी कई रचनाओं पर फिल्में बनी हैं।

1949 में लिखी यह कहानी नाभिकीय जंग के बाद के हाल में ऐसे घर की है, जहाँ कोई ज़िन्दा इन्सान नहीं है, पर इन्सान की पहचान हर चप्पे पर है। मशीनों की मदद से घर में नियमित गतिविधियाँ चलती हैं। जो कुछ तबाह होता है, वह सब इन्सान के वजूद की पहचान है। सबसे तकलीफदेह एहसास सृजन की तबाही है, कविताएँ सुनने के लिए कोई नहीं बचता है, सदी के सबसे बड़े कलाकार पिकासो और मातीस की कृतियाँ जलकर राख हो जाती हैं। कहानी में सेरा टीसडेल की अद्‌भुत कविता का इस्तेमाल है, जिसमें इन्सान का वजूद नहीं रहने पर बहार का आना बेमानी होने की पीर बखानी गई है। - (अनुवादक)

बैठक में बोलती घड़ी कूक उठी - टिक-टिक, बजे सात ठीक, उठ मेरे मीत, उठ मेरे मीत, बजे सात ठीक! मानो उसे फिक्र है कि कोई न उठेगा। अलसुबह घर खाली पड़ा था। घड़ी टिक-टिक करती, खालीपन में अपनी कूक दुहराती चली। सात बजकर नौ हुआ, नाश्ते का वक्त हुआ, सात बजकर नौ हुआ!

रसोई में ब्रेकफास्ट के चूल्हे ने सीटी मारते हुए उसाँस भरी और अपनी गर्म अँतड़ियों से आठ बढ़िया भूरे टोस्ट, आठ ऊपर कुसुम वाले तले अण्डे, बेकन (सूअर का मांस) की 16 फाँकें, दो कॉफी और दूध के दो ग्लास निकालकर रखे।

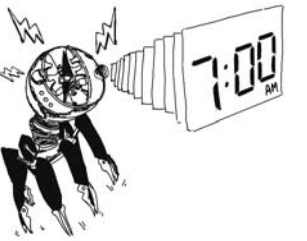

"आज 4 अगस्त, 2026 है," रसोई की छत से एक और आवाज़ आई, "हम कैलिफोर्निया के ऐलेनडेल शहर

में हैं।" शहर का नाम तीन बार दुहराया गया ताकि याद रहे। "आज जनाब फेदरस्टोन का जन्मदिन है। आज तिलिता की शादी की सालगिरह है। बीमा के पैसे भरने हैं; पानी, गैस और बिजली के बिल के पैसे भी भरने हैं।"

दीवारों में कहीं बात आगे बढ़ी, क्लिक की आवाज़ें आईं, मशीनी बिजली की नज़र-तले टेप चल पड़े।

आठ बजकर एक, टिक-टिक, आठ बजकर एक ठीक, स्कूल चलने का टाइम हुआ, काम पर चलने का टाइम हुआ, चलो, निकलो, आठ बजकर एक देख लो! पर न कोई दरवाज़ा खुला न बन्द हुआ, किसी कालीन पर रबर की एड़ियों की नर्म थापें न पड़ीं। बाहर बारिश हो रही थी। सामने के दरवाज़े पर मौसम परखने वाले डिब्बे से शान्त गुंजन उठी, "रिमझिम बरखा रानी आई, रबर-रेनकोट का दिन है लाई...।" साथ में हाँ मिलाती टिप-टिप बूँदें खाली घर की छत पर टपकती रहीं।

बाहर की ओर गराज ने धुन गाई और दरवाज़ा ऊपर चढ़ाते हुए इन्तज़ार करती तैयार गाड़ी की झलक दिखलाई। देर तक इन्तज़ार करने के बाद दरवाज़ा वापस गिर गया।

साढ़े आठ तक अण्डे कुम्हलाकर बासी हो चुके थे और टोस्ट पत्थर जैसे सख्त हो गए थे। एल्यूमीनियम की एक फन्नी ने उन्हें समेटकर मोरी में डाला। गर्म पानी के भँवर में चकराते वो एक धातु के गढ़े में निगले गए और वहाँ से निकास के ज़रिए कहीं दूर किसी समन्दर में फेंके गए। गन्दे बर्तन गर्म पानी के वॉशर में डाल दिए गए और वहाँ से साफ चमकते निकल आए।

घड़ी कूकी, सवा नौ हो गया, सफाई का टाइम हो गया।

दीवार में बने बाड़ों से छोटे रोबो

चूहे उछलते हुए निकल आए। रबर और धातु से बने सफाई के ये छोटे जानवर कमरों में चारों तरफ फैल गए। वे कुर्सियों से टकराते, चकराती मूँछों को ताव देते, कालीनों के सिरों की गाँठों को मथते, आराम-से उनके अन्दर की धूल निकालते। फिर तिलिस्मी हमलावरों जैसे वे अपने बिलों में घुस गए। उनकी बिजली से चमकती गुलाबी आँखें बुझ गईं। घर की सफाई हो चुकी थी।

दस बज गए। बारिश के पीछे से धूप निकल आई। झंखाड़ और मलबे के शहर में घर अकेला खड़ा था। यही एक घर अकेला बचा था। रात को तबाह हो चुके शहर से रेडियो-सक्रिय चौंध निकलती, जो मीलों दूर तक दिखलाई पड़ती।

सवा-दस। बागीचे में फव्वारे सुनहरी बौछारों के साथ चल पड़े। सुबह की नाज़ुक सबा चमकीले बिखरते कतरों से भर गई। खिड़कियों के शीशों पर पानी की बौछारें पड़ीं। हर ओर से सफेदी झड़ चुके पश्चिम की ओर की जली हुई दीवार पर से पानी बहता हुआ नीचे गिरा। कोई पाँच जगहों को छोड़कर घर का पश्चिमी हिस्सा पूरी तरह से काला पड़ चुका था। यहाँ लॉन पर घास काटते एक आदमी की छाया थी। जैसे कि कोई फोटोग्राफ हो, यहाँ फूल चुनती हुई एक औरत की छवि थी। थोड़ी और दूर, हवा में हाथ लहराता एक छोटा लड़का, जिससे थोड़े ऊपर की ओर उछाली गेंद की छवि और दूसरी ओर कभी नीचे न आ पाई गेंद पकड़ने के लिए हाथ उठाए एक लड़की – पल भर वक्त की अवधि में इनकी तस्वीरें लकड़ी में जलकर खुद गई थीं।

आदमी, औरत, बच्चे, गेंद – पुताई के ये पाँच हिस्से बच गए थे। बाकी सब कुछ चारकोल की परत भर रह गया था।

फव्वारे की हल्की बौछारें बागीचे में रोशनी बिखेर रही थीं।

आज के पहले तक यह घर सुकून का मंज़र रहा था। बड़ी सावधानी से यहाँ से सवाल आते, "कौन है? पासवर्ड बतलाओ।" और अकेली लोमड़ियों और मिमियाती बिल्लियों से जवाब न पाकर, इसकी खिड़कियाँ बन्द होती रही थीं और परदे गिरते रहे थे, मानो घर किसी बूढ़ी बाई जैसा मशीनी बौखलाहट की हद तक खुद को बचाने की फिक्र में मशगूल था।

घर वाकई हर आवाज़ से काँप उठता था। कोई गौरैया किसी खिड़की को छू जाती तो परदा झट-से उठता। चिड़िया डर जाती और उड़ भागती! हाँ, घर को किसी चिड़िया तक का छूना मकबूल नहीं था!

दस हज़ार छोटे-बड़े, सेवक, अर्दली, एक साथ उस घर को मन्दिर बना चुके थे। पर वहाँ के प्रभु जा चुके थे और मानो धार्मिक ढंग से रस्में बेमानी और बेवजह होती जा रही थीं।

दिन के 12.

सामने आँगन में एक कुत्ता काँपता हुआ मिमियाया।

सामने के दरवाज़े ने कुत्ते की आवाज़ पहचान ली और वह खुला। कभी बड़े कद का और तगड़ा रह चुका कुत्ता अब हड्डियों तक मरियल और घावों से भरा हुआ था। साथ मिट्टी की लकीरें खींचता हुआ कुत्ता घर के अन्दर आ गया। उसके पीछे मिट्टी साफ करते, फालतू की ज़हमत उठाते चूहे गुस्से में गुर्राते चले।

ऐसा था कि दरवाज़े के नीचे से पत्ती का टुकड़ा भर आ जाए तो दीवार के पलड़े खुल जाते और ताँबे के बने सफाई वाले चूहे तुरन्त उछलकर निकल आते। नापसन्द धूल, बाल या कागज़ इस्पात के जबड़ों में पकड़ फँसा लिए जाते और

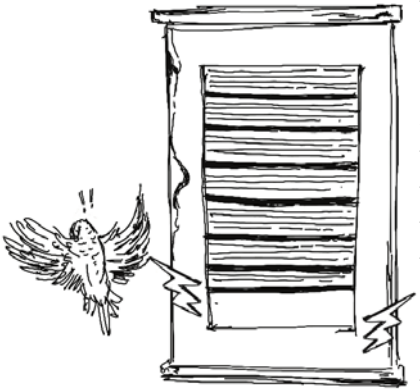

तेज़ रफ्तार से बिलों में ले जाए जाते। वहाँ, तहखाने तक जाती नलियों से अँधेरे कोने में शैतान दानव जैसी बैठी भट्टी की उसाँसें भरती निकास-नली में कूड़ा समा जाता।

हर दरवाज़े पर बौखलाहट में भौंकता हुआ कुत्ता सीढ़ियाँ चढ़ता ऊपर की ओर दौड़ा। आखिरकार जैसा घर ने समझ लिया था, उसे भी समझ आ गया कि वहाँ केवल सन्नाटा है।

वह हवा को सूँघने लगा और रसोई के दरवाज़े को उसने पंजों से खरोंचा। दरवाज़े के पीछे चूल्हा मालपुआ बना रहा था, जिसकी घनी मीठी खुशबू और साथ में चाशनी की महक घर भर में फैली हुई थी।

कुत्ते के मुँह से झाग निकल रहा था, वह दरवाज़े पर लेटा रहा। उसकी आँखों में आग धधक रही थी और वह सूँघता जा रहा था। वह अपनी पूँछ काटता चकराता दौड़ता रहा, पागल-सा चकराया और मर गया। घण्टे भर वह बैठक में पड़ा रहा।

"दो बज गए," आवाज़ कूकी।

नज़ाकत के साथ सड़न का एहसास पाकर चूहों की फौजें बिजली वाली हवा में उड़ती स्याह पत्तियों जैसे गुनगुनाती हुई निकलीं।

सवा-दो।

कुत्ता गायब हो चुका था।

तहखाने में भट्टी अचानक जल

उठी और चिनगारियों के भँवर चिमनी में उछलते ऊपर की ओर उठे।

दो बजकर 35.

आँगन में ताश खेलने के लिए टेबल उभर आईं। अलग-अलग पैड पर ताश की पत्तियाँ चित्तियों-सी फरफराईं।

अण्डे के सलाद वाली सैंडविचों के साथ उम्दा शराब के जाम ओक लकड़ी से बनी बेंचों पर आ पहुँचे। संगीत बजने लगा।

पर टेबल पर सन्नाटा था और ताश की पत्तियाँ छूने को कोई न था।

चार बजे मेज़ की टाँगें बड़ी तितलियों-सी मुड़कर बन्द हो गईं और पलड़ों वाली दीवारों में समा गईं।

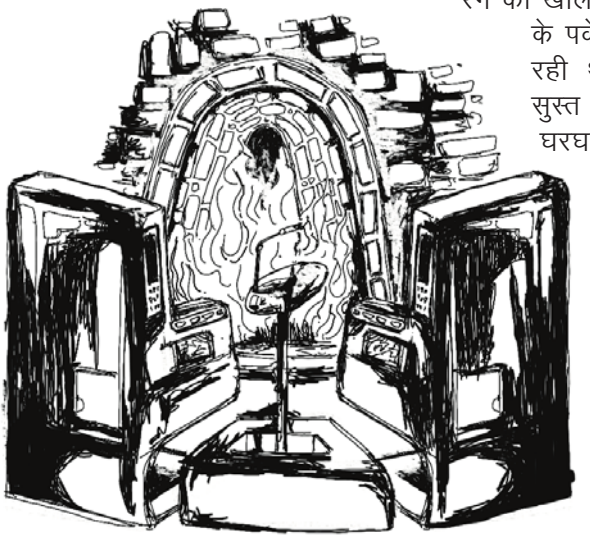

साढ़े चार।

नर्सरी की दीवारें जगमगा उठीं।

जानवरों की आकृतियाँ उभर आईं: स्फटिक के बने पीले जिराफ, नीले शेर, गुलाबी चिकारे और नीली चमक वाले तेंदुए उछल रहे थे। दीवारें काँच की बनी थीं। उनमें से रंग और फन्तासी का खेल दिखता था। तेल से लचीले बने दाँतों में छिपी फिल्में टिककर चल रही थीं और लगता था कि दीवारें ज़िन्दा हैं। नर्सरी का फर्श भुरभुरे अनाज के खेत-सा तराशा गया था। उस पर एल्यूमीनियम के तिलचट्टे और लोहे की बनी टिड्डियाँ दौड़ रही थीं। थमी हुई गर्म हवा में जानवरों के रोओं की तीखी महक में नाज़ुक लाल तन्तुओं वाली तितलियाँ नाच रही थीं। एक तीखे-से रंग की खाल में से पीले मधुमक्खियों के पके छत्ते जैसी आवाज़ें आ रही थीं, जो दरअसल एक सुस्त बड़बड़ाते शेर की घरघराहट थी। जंगली जिराफ की टापों की टप-टप और जंगल में ताज़ा बारिश की टिप-टिप आवाज़ें आ रही थीं। साथ ही, गर्मी में सूख गई घास पर दूसरे जानवरों के खुरों की आवाज़ें थीं। दीवारें मीलों तक दूर फैली सूखी खरपतवार और अनन्त आसमान

में विलीन हो गईं। जानवर काँटों की झाड़ियों के पीछे और पोखरों की ओर चले गए।

अब बच्चों की बेला आ गई।

पाँच बज गए। बाथ टब साफ गर्म पानी से भर गया।

छ:, सात, आठ बज गए। जादू के खेल की तरह रात का भोजन परोसा गया। पढ़ने के कमरे में कहीं कुछ हल्का-सा टकराया। अलाव में जलती आग से हल्के ताप की लपटें उठ रही थीं। उसके उल्टी तरफ धातु के बने स्टैंड में से एक सिगार निकल आया, जिसके सिरे पर आधा इंच हल्की स्याह राख थी। उसमें से धुआँ निकल रहा था, उसे अपने पीने वाले का इन्तज़ार था।

नौ बज गए। बिस्तरों ने अपने छिपे सर्किट गर्म किए। यहाँ रातों को ठण्ड पड़ती है।

नौ बजकर पाँच। स्टडी की छत पर से एक आवाज़ आई:

"मिसेस मैकलेलन, आज आप कौन-सी कविता सुनना चाहेंगी?"

घर सन्नाटे में डूबा रहा।

आखिर फिर आवाज़ आई, "आपकी कोई पसन्द नहीं है तो मैं कुछ भी आपको सुना रहा हूँ।"

आवाज़ के साथ हल्का संगीत गूँज उठा। "तो सुनिए सेरा टीसडेल की कविता; जहाँ तक मुझे याद है, आपकी पसन्द की कवि हैं...

"हल्की फुहारें आएँगी और ज़मीं महकेगी,
अबाबीलें तीखी चहकती चकराएँगीं;
रात को पोखर में गाते मेंढक होंगे
काँपती सफेदी में जंगली आलूबुखारे होंगे,
आग-से धधकते पंख लिए लाल सीने वाले पंछी होंगे
निचले बाड़ों पर बैठ मनमाफिक सीटियाँ बजाते होंगे;
किसी को नहीं पता होगा कि एक जंग छिड़ी थी,
तब कोई नहीं जानेगा जब आखिर जंग रुक जाएगी
न पंछी न पेड़ों को, किसी को फर्क नहीं पड़ेगा,
आदमजात हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी
और खुद बहार जब सुबह को जागेगी
बड़ी बेखबर होगी कि हमारी मौजूदगी न होगी।"

पत्थर के अलाव पर आग जलती रही। ट्रे पर बेजान राख के ढेर पर सिगार गिर गया। चुप खड़ी दीवारों के बीच कुर्सियाँ एक-दूसरे की ओर ताकती रहीं और संगीत बजता रहा।

***

दस बजे घर मौत की ओर बढ़ चला।

हवा बही। एक पेड़ की गिरती हुई डाल रसोई की खिड़की से टकराई। शीशी में भरा सफाई का घोल छितराता हुआ चूल्हे पर बरसा। पल भर में कमरा लपटों की चपेट में था!

"आग!" एक आवाज़ चीखी। घर की बत्तियाँ जली-बुझीं, छतों से पानी के पम्प, पानी की बौछारें बरसाने लगे। पर तब तक घोल फर्श पर बिछे लिनोलियम के रेज़िन पर फैल चुका था और रसोई के दरवाज़े के नीचे से मानो फर्श को चाटता, निगलता हुआ आगे बढ़ रहा था। कई आवाज़ें एक साथ चीख रही थीं, "आग, आग, आग!"

घर ने खुद को बचाने की कोशिश की। दरवाज़े पूरी तरह बन्द हो गए। पर ताप की वजह से खिड़कियाँ टूट गईं और हवा बहती हुई आई और आग निगलने लगी।

करोड़ों चिनगारियों वाली आग की लपटें आसानी-से कमरा-दर-कमरा फैलती रहीं और फिर सीढ़ियाँ चढ़ने लगीं। दीवारों से पानी फेंकते चूहे चिंचियाते रहे, पानी की पिचकारियाँ चलाते रहे और फिर और पानी लाने दौड़ते रहे।

दीवारों से फव्वारे मशीनी बारिश बरसाते रहे।

पर देर हो चुकी थी। उसाँसें भरता कोई पम्प कहीं झटके-से रुक गया। आग बुझाने वाली बारिश रुक गई। कई दिनों से नहाने के टब भरने

वाली और बर्तन धोने वाली पानी की बची हुई सप्लाई खत्म हो गई।

चिटकती हुई आग सीढ़ियों पर चढ़ने लगी। ऊपरी हॉल में तेल की परत पर भुने चटपटे व्यंजनों की तरह पिकासोवों और मातीसोवों को निगलती आग कलाकृतियों के कैन्वस को नज़ाकत के साथ काली राख के भुरभुरे खस्ते में बदल रही थी।

अब आग बिछौनों पर लेटी थी, खिड़कियों पर नाच रही थी, परदों का रंग बदल रही थी!

और तब मज़बूती से बचाव की कोशिशें शुरू हुईं।

बरसाती के छिपे दरवाज़ों से, बिना आँखों वाले रोबो चेहरे सामने आ गए और उनकी नलियों जैसे मुँह से ज़ोरों-से हरे रंग का रसायन छिड़का गया।

आग पीछे को हुई, जैसे मरे हुए साँप को देखकर भी हाथी एकबारगी पीछे को हटता है। अब फर्श पर हरे झाग के ठण्डे ज़हर से आग का कत्ल करने 20 साँप फन पटक रहे थे।

पर आग चालाक थी। उसने बरसाती की ओर से घर के बाहरी

हिस्से में पम्पों तक लपटें पहुँचा दी थीं। फिर विस्फोट हुआ! पम्पों को चलाने वाला, बरसाती कमरे वाला ज़हन शहतीरों पर काँसे के छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर गया।

आग हर कपड़ों की आल्मारी तक दौड़ती आई और वहाँ लटके कपड़ों को उसने छुआ।

घर काँप रहा था। ओक की बनी हड्डी-दर-हड्डी काँप रही थी। ताप से डरता उसका नंगा जिस्म दुबकता जा रहा था। उसकी तारें, उसकी शिराएँ उभर आई थीं, मानो किसी सर्जन ने उसकी चमड़ी चीरकर लाल नसों और शिराओं को झुलसी हुई हवा में काँपने को छोड़ दिया था। "बचाओ! बचाओ! आग! भागो! भागो!" ताप आईनों को बर्फानी जाड़े की भुरभुरी बर्फ की तरह टुकड़ों में चूर कर रही थी। आवाज़ें नर्सरी के बालगीत-सा चीख रही थीं – "आग, आग, भागो, भागो" – कोई दर्जन आवाज़ें, ऊँची और धीमी – मानो किसी जंगल में अकेले पड़ गए बच्चे मरते जा रहे हों। तारों पर से चादर गर्म छोटे अखरोट जैसी चटखती हुई टूटने लगीं और आवाज़ें धीरे-धीरे खत्म हो गईं। एक, दो, तीन, चार, पाँच, आवाज़ें खत्म हो गईं।

नर्सरी में पौधों के जंगल जल गए। नीले शेर गरजते रहे, बैंगनी जिराफ टाप-टपकते खत्म हो गए। तेंदुए चकराने लगे, उनका रंग बदल गया और आग के आगे-आगे दौड़ते एक करोड़ जानवर दूर किसी भाप बनती नदी की ओर गायब हो गए...

10 और आवाज़ें खत्म हुईं। आग के धसान के आखिरी पलों में कई भूली भटकी-सी आवाज़ों का समूह-गान सुनाई पड़ रहा था। कहीं वक्त बताया जा रहा था, कहीं संगीत बज रहा था, दूर से संचालित घास काटने की मशीन से लॉन की घास काटने की आवाज़ थी, ज़ोर-से खुल रहे या और बन्द हो रहे सामने वाले दरवाज़े पर कोई छतरी बौखलाहट के साथ खुल रही थी; हज़ारों ऐसी बातें हो रही थीं, मानो किसी घड़ी की दुकान में हर घड़ी एक-दूसरे के ठीक पहले या बाद घण्टों की आवाज़ बजा रही हो; पागलपन और बौखलाहट भरा मंज़र था, पर साथ ही कहीं सामूहिक एकजुटता थी; मिलकर गा रही, चीख रही आवाज़ें। कुछ बचे हुए सफाई वाले चूहे बहादुरी के साथ बाहर निकलकर भयंकर राख को बुहार रहे थे! और हालात को नज़ाकत के साथ नज़रअन्दाज़ करती एक आवाज़ आग में जल रहे पढ़ने के कमरे में ऊँची आवाज़ में कविता पढ़ रही थी, जब तक सारी फिल्मों की फिरकियाँ जल नहीं गईं, तारें जलकर कुम्हला नहीं गईं और सर्किट चरमरा नहीं गए।

आग ने घर को फोड़ डाला और उसे ज़मीन पर चित गिरने दिया, जिससे धुआँ और चिनगारियों के फुनगों के पल्ले फूलते हुए उड़ निकले।

रसोई में आग और जलते काठ की बारिश के ठीक पहले चूल्हा पागलों की तरह तेज़ रफ्तार से नाश्ता तैयार कर रहा था – 10 दर्जन अण्डे, ब्रेड की छः फाँकों के टोस्ट, 20 दर्जन बेकन की पट्टियाँ। जैसे ही आग इनको निगल गई, चूल्हा फिर से काम पर लग गया और उसमें से बौखलाई साँसें निकल रही थीं।

टक्कर। बरसाती का कमरा रसोई और आँगन में धँसता-टकराता हुआ। आँगन तहखाने में, तहखाना आगे किसी छोटे तहखाने में। डीप फ्रिज, आरामकुर्सी, फिल्मों के टेप, सर्किट, बिस्तर और दीगर ऐसे ढाँचे, गहरे कहीं गढ़े में ढेर बनकर फिंक गए।

धुआँ और चुप्पी। ढेर सारा धुआँ।

पूरब की ओर भोर की हल्की किरणें उभरीं। खण्डहर में एक दीवार अकेली खड़ी थी। सूरज मलबे के ढेर और उससे निकलती भाप पर चमकता उठ रहा था और दीवार में से एक आखिरी आवाज़ लगातार एक ही बात बोलती जा रही थी:

"आज 5 अगस्त 2026 है, आज 5 अगस्त 2026 है, आज..."

रे ब्रैडबरी (1920-2012): अमेरिकी लेखक और पटकथा लेखक थे। 20वीं सदी के सबसे प्रसिद्ध अमेरिकी लेखकों में से एक, रे ब्रैडबरी ने फन्तासी, विज्ञान कथा, डरावनी, रहस्यमयी और यथार्थवादी कथा सहित कई प्रकार की विधाओं में काम किया। *न्यूयॉर्क टाइम्स* ने ब्रैडबरी को आधुनिक विज्ञान कथाओं को साहित्य की मुख्यधारा में लाने के लिए सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदार लेखक कहा था।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: हरजिन्दर सिंह 'लाल्टू': सेंटर फॉर कम्प्यूटेशनल नेचुरल साइंस एंड बायोइन्फॉर्मेटिक्स, आई.आई.आई.टी., हैदराबाद में प्रोफेसर। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी, न्यू यॉर्क, यूएसए से पीएच.डी.। सन् 1987-88 में *एकलव्य* के साथ यूजीसी द्वारा स्पेशल टीचर फैलोशिप पर हरदा में रहे। आप हिन्दी में कविता-कहानियाँ भी लिखते हैं।

सभी चित्र: पूजा के. मैनन: *एकलव्य*, भोपाल में बतौर जूनियर ग्राफिक डिज़ाइनर काम कर रही हैं। जन्म पलक्कड़, केरल में हुआ लेकिन एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करने के कारण बहुत-से नए लोगों से मिलना हुआ। चूँकि वे अन्यथा बातचीत करने में झिझकती थीं, स्केचिंग ने उनके विचारों को सम्प्रेषित करने और टिप्पणियों का दस्तावेज़ीकरण करने में एक माध्यम का काम किया। धीरे-धीरे रेखाचित्र कहानियों में बदल गए जिन्होंने उन्हें जीवन और लोगों को समझने और खुद को व्यक्त करने में मदद की।

यह कहानी बैंटम बुक्स द्वारा प्रकाशित पुस्तक *द मार्शियन क्रॉनिकल्स* से साभार।